एक मन्दिर. . .

प्रस्तावना

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

गुरुवार, १० जुलाई, २०२५ को शुभ गुरुपूर्णिमा की सुबह, मैं आश्रम के उपवन में कुछ पलों के लिए मौन बैठकर इस दिन के मांगल्य के बारे में सोच रही थी। मैं सोच रही थी कि सदियों से मानवता कितनी श्रद्धा के साथ इस दिन की पावनता का सम्मान करती आ रही है—ऐसा केवल इसलिए है क्योंकि बहुत समय पूर्व, एक बार, शिष्यों ने अपने श्रीगुरु से एक प्रश्न पूछा और श्रीगुरु ने उसका उत्तर दिया। [महर्षि वेदव्यास और गुरुपूर्णिमा के उद्‌गम की कहानी पढ़ें।]

मैं जब गुरु-शिष्य के बीच के इस सर्वाधिक रूपान्तरणकारी सम्बन्ध के विषय में मनन कर रही थी तो मेरे मन में यह अभिलाषा जगी कि हाल ही में सिद्धयोगियों ने गुरुपूर्णिमा के अपने अनुभवों के बारे में जो कहा है, मैं वह पढ़ूँ। अतः, मैंने सिद्धयोग पथ की वेबसाइट देखी। वहाँ, स्वामी इन्दिरानन्द द्वारा गुरुपूर्णिमा के अवसर पर दक्षिणा अर्पित करने के आमन्त्रण-पत्र के नीचे, फ़्लॉरिडा से एक सिद्धयोगी ने अपना अनुभव लिखा था जो मैंने पढ़ा। इस सहृदय सिद्धयोगी ने लिखा था :

> दक्षिणा का अभ्यास मुझे बहुत प्रिय है। इस दिव्य अभ्यास द्वारा मेरा जीवन पूरी तरह से रूपान्तरित हो गया है और बन गया है एक मन्दिर कृपा का। दक्षिणा ने मुझे देने और पाने के एक अद्भुत चक्र में खींच लिया है जिसके माध्यम से मुझे यह अनुभूति होती है कि मेरी श्रीगुरु सदैव मेरे साथ हैं। वे निरन्तर मुझे सिखाती हैं, मेरा मार्गदर्शन करती हैं, मेरा रक्षा करती हैं और मुझे दिव्य प्रेम से भरती हैं।

जब मैंने ये शब्द पढ़े *एक मन्दिर कृपा का,* तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो समय थम-सा गया है। अब, हो सकता है कि तुम यह सोच रहे हो, "गुरुमाई जी, क्या आपने पहली बार ये शब्द सुने या पढ़े हैं, *एक मन्दिर कृपा का,* और क्या इसीलिए आप इसकी शक्ति से इतनी प्रभावित हुईं?" मेरा उत्तर है, "बात यह नहीं है।" यही कारण है कि समय का महत्त्व होता है, स्थान का महत्त्व होता है, एक व्यक्ति का

महत्त्व होता है, तुम्हारी नियति का महत्त्व होता है, तुम्हारे कर्मफलों का महत्त्व होता है। प्रत्येक अवसर की अपनी शक्ति होती है।

बात यह है कि वह गुरुपूर्णिमा महोत्सव की सुबह थी। उस दिन सुबह थोड़ी देर में, मैं भगवान नित्यानन्द के मन्दिर में सत्संग करने वाली थी। मैं महर्षि वेदव्यास की कहानी पर मनन कर रही थी। मैं चिन्तन कर रही थी कि बाबा मुक्तानन्द ने कितने ही तरीक़ों से हज़ारों साधकों के जीवन को प्रभावित किया। मैं अपने आशीर्वादों का स्मरण कर रही थी जिनके कारण मैं इतना धन्य जीवन बिता रही हूँ।

मैं कृतज्ञता की अनुभूति कराने वाले उन स्वर्णिम पलों में निमग्न थी जब मैंने यह वाक्यांश पढ़ा, *एक मन्दिर कृपा का।* ऐसा लगा मानो सृष्टि बोल उठी हो और मैंने उसे सुना। ऐसा लगा मानो सृष्टि में हरकत हुई हो और मैंने उसे महसूस किया। ऐसा लगा मानो सृष्टि जो जानती थी मुझे उसका बोध था। एक मन्दिर कृपा का, हाँ। हम कृपा के मन्दिर में रहते हैं। हम जहाँ भी खड़े होते हैं, हम जहाँ भी बैठते हैं, हम जहाँ भी ध्यान करते हैं, हम जहाँ भी चलते हैं, बात करते हैं, काम करते हैं, यह वहीं प्रकट हो जाता है।

मुझे इस मन्दिर का एक विलक्षण अनुभव हो रहा था और मुझे अपने मन में **एक मन्दिर. . .** ये शब्द सुनाई पड़ रहे थे कि तभी अचानक मुझे *प्रकाश* दिखाई दिया। तो मैंने मन ही मन कहा, "एक मन्दिर प्रकाश का। प्रकाश। *प्रकाश।* कैसा मनोहारी शब्द—*प्रकाश!* कृपा का प्रकाश मुझ पर छा गया है। मैं प्रकाश हूँ।"

जब मैं इस बोध के साथ बनी हुई थी तो प्रकाश *[अंग्रेज़ी में 'लाइट']* और उससे जुड़े कुछ और विचार मेरे अन्दर उभरे। मैंने प्रफुल्लता *[अंग्रेज़ी में 'लाइटहार्टेडनॅस']* के बारे में सोचा। लचीलापन, सुनम्यता। हलका होना, *अंग्रेज़ी में 'बीईंग लाइट',* जिसका अर्थ प्रकाश होना भी है और हलका होना भी यानि भारी बोझ न ढोना। तो मैं प्रकाश के एक मन्दिर में थी।

एक मन्दिर कृपा का, इस वाक्यांश से मेरे भीतर जो उभरा, उसके बारे में मैं कितना कुछ कह सकती हूँ। तथापि, वर्ष २०२५ के लिए चूँकि मेरा सन्देश है, *अपने समय को अपने लिए लाभप्रद बनाओ,* इसलिए मैं अपने अनुभव के वर्णन में यहीं ठहरती हूँ और बड़े बाबा के मन्दिर में सत्संग के दौरान जो हुआ वह बताती हूँ।

मैंने यह तय किया कि सत्संग में मैं सिद्धयोगियों से पूछूँगी कि वे इस वाक्यांश को कैसे पूर्ण करेंगे—**एक मन्दिर. . .**। वे कौन-से संकल्पों को साकार करना चाहेंगे? मैं चाहती थी कि हर कोई अपने जीवन की कल्पना एक मन्दिर के रूप में करे—एक ऐसे मन्दिर के रूप में जो उस सद्गुण से विभूषित है जो वर्तमान क्षण में उस व्यक्ति विशेष के लिए अर्थपूर्ण है।

इसलिए, सत्संग के आरम्भ में मैंने सत्संग के एक प्रतिभागी से सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर साझा किए गए उस अनुभव को पढ़कर सुनाने के लिए कहा जो मुझे इतना प्रेरणादायी लगा था। उसने बहुत खूबसूरती से वह अनुभव पढ़कर सुनाया और उसके बाद मैंने अपना वह अनुभव सबको बताया जो मुझे उसी सुबह हुआ था। फिर मैंने प्रतिभागियों से कहा कि वे सभी के साथ यह साझा करें कि *वे* किस तरह के मन्दिर की रचना एवं अनुभूति करना चाहते हैं।

बहुत-से लोग अपनी श्रीगुरु के आग्रह को पूरा करने के लिए उत्सुक थे। इन शिष्यों ने तुरन्त यह बताया कि वे अपने लिए कैसे मन्दिर का निर्माण करेंगे। यह दृश्य कितना सुन्दर था! कितना मधुर था, हरेक के हृदय से निकले विचारों व भावों के आलिंगन में रहना—यूँ बड़े बाबा के मन्दिर में बैठना, सत्संग के स्पन्दनों में, बड़े बाबा के सान्निध्य में, सिद्धयोग के शिष्यों के बीच, गुरुपूर्णिमा के दिन। तुम इसे *जादुई* कह सकते हो। निश्चित ही, यह कृपा से पूरित था।

एक मन्दिर. . . के वैभव की अनुभूति की इस दूसरी तरंग के बाद मैंने महसूस किया कि मैं गुरुपूर्णिमा की इस भेंट को वैश्विक सिद्धयोग संघम् में हर किसी के साथ साझा करना चाहती हूँ। तो मैंने लोगों से कहा कि वे इस विषय पर चिन्तन जारी रखें और **एक मन्दिर. . .** से सम्बन्धित अपने संकल्प सिद्धयोग पथ की वेबसाइट को भेजें। मैंने यह वादा किया कि मैं उनमें से कुछ संकल्पों को चुनकर, उन्हें संसार भर में सबके साथ साझा करूँगी।

सत्संग में जब सबने यह सुना तो उनका उत्साह स्पष्टगोचर था। और कुछ ही समय में, **एक मन्दिर. . .** से सम्बन्धित एक सौ से भी अधिक संकल्प वेबसाइट को भेजे गए!

उनमें से ये बीस संकल्प हैं जो मैंने तुम सबके लिए चुने हैं। **एक मन्दिर. . .** से सम्बन्धित तुम खुद अपना संकल्प भी निश्चित रूप से लिख सकते हो और, यदि चाहो तो, उस संकल्प को उन लोगों के साथ साझा कर सकते हो जो उसे सुनकर लाभान्वित हो सकते हैं।

परम देवी, दिव्य शक्ति को समर्पित नवरात्रि के त्योहार का आरम्भ करते हुए, आओ, हम उनकी उपस्थिति की अनुभूति करें, हर पत्ते में, हर पत्थर में, पानी की हर बूँद में, धूल के हर कण में, भोजन के हर निवाले में, एक मुस्कान से बिखरी हर किरण में, हर मीठे शब्द में, हर दयालु कृत्य में, पवन के हर सुरभित झोंके में। हम हर उस चीज़ में उन्हें पहचानें जो हमें हमारी अपनी अन्तर्जात स्वतन्त्रता का अनुभव प्रदान करती है।

सद्गुरुनाथ महाराज की जय

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

© २०२५ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउण्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।